UGC Approved Journal
Sr. No. 64310

ISSN 2319-8648

Indexed (IIJIF)

Impact Factor - 2.143

Current Global Reviewer

UGC Approved International Refereed Research Journal Registered & Recognized
Higher Education For All Subjects & All Languages

Special Issue

Issue I, Vol I 10th February 2018

Editor in Chief
Mr.Arun B. Godam

www.rjournals.co.in

16	इक्कीसवी सदी के हिन्दी काव्य में बाजारवाद	स.प्रा.मुजावर एस.टी.	42
17	वैश्वीकरण के दौर में बदलते पारिवारिक मूल्य शेष संदर्भ - आपका बंटी : मन्नू भंडारी	प्रा. डॉ. चित्रा धामणे	45
18	"वैश्वीकरण तथा अनुवाद"	डॉ. पवार विक्रमसिंह विजयसिंह	48
19	"वैश्विकरण के परिप्रेक्ष्य में हिंदी साहित्य के अंतर्गत प्रस्तुत शोधालेख' "डॉ.शंकर शेष का हिन्दी नाटक साहित्य में योगदान"	प्रा.संजय व्यंकटराव जोशी	51
20	हिन्दी कहानी और वैश्वीकरण	प्रा.विनायक कापावार	54
21	"वैश्विकरण के परिप्रेक्ष्य में हिंदी ग़ज़ल और किसान"	डॉ. मनोजकुमार ठोसर	57
22	मोहनदास नैमिशराय के उपन्यास 'आज बाजार बंद है' में चित्रित वेश्या जीवन	प्रा. अशोक गोविंदराव उघडे	60
23	"विधाओं के लिए कथा एवं पात्रों के चयन का महत्त्व"	प्रा.डॉ. न.पु. काळे	63
24	वैश्वीकरण और स्त्री- विमर्श	सौ.मोहिनी रणजित कुटे	67
25	"बाजारवाद के परिप्रेक्ष्य में काल कोठरी"	प्रा. रामहरी काकडे	70
26	वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में उपन्यासों में विधाओं का सम्मिश्रण	रविंद्र कारभारी साठे	72
27	वैश्विकरण : डॉ. कुसुम कुमार के नाटकों के संदर्भ में	डॉ. सविता कचरू लोंढे	75
28	वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में हिन्दी कविता	संताप नागरे	78
29	वैश्वीकरण और बाजारवाद	भोई वनसिंग	82
30	"वैश्वीकरण के अंधकार में हिंदी का घटता स्तर"	रुबीना शमीम खान	83
31	वैश्विकरण के दौर में हिन्दी भाषा का स्थान	शेख अब्दुल बारी अब्दुल करीम	86
32	जागतिकीकरण और हिंदी उपन्यासों में आदिवासी चिंतन	डॉ.शेख अफरोज फातेमा सय्यद टिपुसुलतान सय्यदनुर	88

ISSN 2319 - 8648 CURRENT GLOBAL REVIEWER
Impact Factor : 2.143 SPECIAL ISSUE Issue I, Vol I, 10th Feb. 2018

"बाजारवाद के परिप्रेक्ष्य में काल कोठरी"

[illegible]
[illegible] महाविद्यालय, शिवाजीनगर (गढी) तह गेवराई जि.बीड

(25)

वर्तमान समय वेश्वीकरण का समय है। आधुनिक संचार साधनों के अविष्कार के कारण वेश्वीक ग्राम की संकल्पना का उदय हुआ है। इसका प्रारंभ मूलतः अमरिका, यौरप आदि प्रगत राष्ट्रों की नीति के कारण हुआ और विश्व के अन्य राष्ट्रों को इन नितियों का [illegible] पडा। भारत ने सन १९९१ ई को नई आर्थिक नीति के अनुसार बाजारवाद को स्वीकृति दी जिससे भारत भी वेश्वीक ग्राम का हिस्सा बन गया। इस नई आर्थिक नीति ने भारतीय समाज के हर क्षेत्र को प्रभावित किया। आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक क्षेत्रों पर इसका व्यापक प्रभाव परिलक्षित होता है। इन सभी का प्रभाव साहित्य के अन्य विधाओं के समान नाटक विधा पर भी पडना स्वाभाविक था। बाजारवाद के प्रभावस्वरुप ही हिंदी नाटकों को दो वर्गो में विभागीत किया गया- साहित्यिक नाटक और रंगमंचीय नाटक। "दरअसल व्यावसायिकता- अव्यावसायिकता के प्रश्नों ने साहित्य और रंगमंच के विरोधाभास में हिंदी नाट्य लेखन का [illegible] - निर्माण और मूल्यांकन होने नही दिया है।"[१] बाजारवाद का मूल मंत्र वित्त है। बाजार हर व्यक्ति हर वस्तु को आर्थिक मूल्यों की दृष्टि से देखता है। स्वदेश दिपक का नाटक 'काल कोठरी' बाजारवाद से निर्मित समस्या का चित्रण करता है।

स्वदेश दिपक का नाटक 'काल कोठरी' में नाटककार, निर्देशक, कलाकार एवं दर्शक - पाठकों की बाजारवादी मानसिकता का चित्रण किया है। इस नाटक में कौल एक निर्देशक है और रजत उनके नाटकों में नायक का अभिनय करनेवाला एक कलाकार। दोनों [illegible] प्रतिबध्दता, प्रतिष्ठा, स्वातंत्र्य और नैतिकता से जूडे प्रश्नों से जूझ रहे है। कौल एक वृध्द नाटककार नवीन वर्मा के एक नाटक [illegible] मंथन के लिए चुनते है जो रजत के शिवाय अन्य कलाकारों को पसंत नही है। क्योंकि इन्हें लगता है यह नाटक दर्शकों को पसंद नही आएगा। इसपर कौल कहते है, "है तो लाओं कहाँ लिखे जा रहे है, अर्थपूर्ण नाटक। अपनी - अपनी राजनीति की रंडो बन गए है लेखक। हाथ में कलम नहीं, लाठी है, लाठी। हाक ले जाते है सारे पात्रों को अपने फटे हुए पार्टी झण्डे के नीचे।"[२] निर्देशक कौल नाटक में [illegible] राजनीति की कामना करते है। उन्हे लेखकों एवं कलाकारों का बाजार की भीड बनना पसंद नही है। इसिलिए वे वृध्द नाटककार 'नविन वर्मा' का एक नाटक मंथन के लिए चुनते है। जो अपनी आदर्शवादीता के कारण आलोचकों एवं निर्देशकों से बहोकृत है। आदर्शवाद का नाम अब बाजारवाद ने लिया है और लेखक नविन वर्मा स्वयं को बाजारवाद से अलग रखते है। इसी कारण आलोचक नवीन वर्मा पर कुछ लिखना पसंद नही करते। बदरी कौल के माध्यम से लेखन ने रंगमंचीय जीवन पर बाजारवाद के प्रभाव का चित्रण किया है। बाजार की सस्ती माँग के अनुसार लिखी साहित्य कृति को निंदा की गई है।

किशोरचंद वर्मा आई.ए.एस. अफसर है तथा वह बाजारवाद का पूरस्कर्ता है। ये लोक विभाग में कलचर कमिशनर पद पर कार्यरत है। भारत सरकार की संस्कृति विभाग में डिप्टी डायरेक्टर ड्रामा की पोस्ट पर साक्षात्कार समिति के प्रमुख के रुप में आए है। [illegible] अंदाजा अफसर के इस कथन से ही हो जाता है- "किशोरचन्द शर्मा कलचर कमिशनर ही नहो अंग्रेजी कवि भी है। [illegible] प्रनन्सीएशन सुना, उनके सामने इतनी शुध्द हिन्दी मत बोला कर। कान्फीडेशनल रिपोर्ट खराब कर देंगे। [illegible]" वे अंग्रेजी संस्कृति के हिमायती है तथा व्यवस्था के बाजार का हिस्सा है। अनुभव एवं शिक्षा से रजत श्रेष्ठ होकर भी वह [illegible] चयन करता है। क्योंकि वसुन्धरा के चयन के लिए शिक्षा मंत्री का फोन आया था और वसुन्धरा बाजारवादी मूल्यों का [illegible] है- "(कटे बालों, मोहक चाल, मीठी आवाज वाली वसुन्धरा का प्रवेश। अभिजात्य वर्ग, क्लास वाली हिन्दो बोलेगी- [illegible]। सवाल कोई भी पूछे, जवाब शर्मा की तरह देखकर बोलेगी।)......... वसुन्धरा : थेंक्स ए लाट सर। उस डांस के दो छोटे [illegible] की कोशिश करती हूँ। रौद्र और श्रृंगार। (खडी हो गई। रौद्र इसवाला भाग लगभग कौल की तरफ देखकर करती है और [illegible] वाला हिस्सा शर्मा की तरफ देखकर।)[४] उसके इस बर्ताव के कारण ही मी शर्मा रजत का चयन न कर वसुन्धरा का चयन करता है। [illegible] वह रजत को उलटे - सिधे सवाल पूछता है। रंगमंचीय कलाकारों में भी नायक का अभिनय मिलने हेतु निर्देशक को [illegible] का प्रचलन है।

CURRENT GLOBAL REVIEWER

ISSN : 2319 - 8648 Impact Factor : 2.143 SPECIAL ISSUE Issue I, Vol I, 10th Feb. 2018

रजत की पत्नी मीना भी पहले अर्थ के अभाव में पीडित चित्रित की गई है। उसका कहना है कि इस अभिनय से घर नही [illegible] अन्य लोगों के समान भौतिक सुविधाओं की आवश्यकता है। मीना को यह अच्छा नही लगता कि, उसका और रजत का [illegible] बहन और रिटायर्ड पिता के अर्थाजन पर चले। उसका यह दुःख तब और भी बढ जाता है जब उसे कामवाली बाई से [illegible] सामान लाना पडता है। अर्थाभाव के कारण रजत और मीना के बीच अक्सर कलह हो जाता है। "मीना : जिंदगी कोई नाटक [illegible] की नाईने हिसाब-किताब से बोली जायें, एक सिलसिले में। लेकिन तुम। तुम केसे समझोगे यह बात। न तुम्हारा जीवन अपना न तुम्हारी भाषा अपनी। माँगी हुई जिंदगी जीते हो, फिर क्यों नही बोलोगे माँगे हुए संवाद। सच कोई नाटक नहीं, कोई स्टेज नहीं जो बदल [illegible] चाहने से। सच शादी है। सच है परिवार। और सच है मीना, मीना। माइं से उधार माँगती मीना।"[5] इतना ही नही तो मीना को [illegible] उसका बेटा अंगद रंगमंच से दूर ही रहे। वह अंगद पर रजत के प्रभाव को स्वीकार नही पाती।

नाटककार स्वदेश दिपक ने सम्पूर्ण नाटक में बाजारवादी मूल्य एवं कलाकार की प्रतिबध्दता, प्रतिष्ठा और नैतिकता से जुडे प्रश्नों का [illegible] किया। तभी तो निर्देशक कौल आत्मा की आवाज माननेवाले आदर्श ऐसे नाटककार नविन शर्मा के नाटक का मंचन करने का [illegible] है। नाटककार वर्मा एक आदर्शवादी लेखक है। जो अभीतक दस नाटक लिख चुके है लेकिन किसी वाद से संबन्ध न रहने [illegible] बाजारवाद का स्वीकार न कर आदर्शवादी बने रहे। उनकी इसी आदर्शवादीता के कारण आलोचकों ने ऊपर कभी एक पक्ती भी नही [illegible]। उनका मानना है कि, भविष्य का जन्म वर्तमान आदर्श के गर्भ से ही होता है। उनका यह विश्वास तब खरा उतरता है जब उनके [illegible] नाटक को मंचीत करने का निर्णय लिया जाता है। इसमें रजत के पिता के विचार भी महत्वपूर्ण है- जो मानवतावादी आदर्शवाद पर चल रहे है। जब कौल कहता है कि, इतने कम समय में नाटक का मंचन कैसे किया जा सकता है ? तब दादा उसे [illegible] करते है क्योंकि रजत के अंदर छीपे कलाकार को वह सही रुप में पहचानते है।

नाटककार स्वदेश दिपक ने नाटक के अंत में बाजारवादी मानसिकता को पराजीत किया है। प्रारंभ में नाटक के मंचन को [illegible] करनेवाले सभी अभिनेता अंत में नाटक के मंचन के लिए तैयार होते. निर्देशक कौल की मेहनत रंग लाती है। बाजारवाद के प्रभाव स्वरुप उत्पन्न समस्याएँ पीछे रहती है और एक कलाकार की प्रतिबध्दता, प्रतिष्ठा एवं नैतिकता की जीत होती है। नाटककार ने मध्यवर्गीय जीवन पर बाजार के मूल्यों का प्रभाव अच्छी प्रकार से चित्रित किया है, लेकिन इस बाजारवाद को अंत में मात खानी ही पड़ी। रजत के [illegible] 'दादा' बहन शोभा, पुत्र अंगद, निर्देशक कौल तथा नविन वर्मा इन पात्रों को आदर्शवादी रजत के साथ खडा किया गया है। जो रजत का हौसला बढाते है।

निष्कर्षत: कह सकते है कि, स्वदेश दिपक ने नाटक एवं रंगमंच के प्रश्नों को बाजारवाद के परिप्रेक्ष्य में चित्रित किया है। वर्तमान समय [illegible] की अन्य ईकाईयों के समान साहित्य भी बाजार से प्रभावित हुआ। साहित्य में नाटक विधा पर भी इसका प्रभाव पडा है। तभी तो नाटक एवं रंगमंच के प्रश्न आज के समय अधिक जटिल रुप धारण कर चुके है। नाटककार ने नाटक का अंत सूखांत कर बाजारवादी मूल्यों को पराजित किया है। इस नाटक ने महत्वपूर्ण सवालों पर प्रकाश डाला है। जिसमें नाटककार, निर्देशक, अभिनेता आदि के विषय [illegible] प्रश्न है। वर्तमान समय में नाटक के इन ईकाईओं को आपस में संवाद कर इस समस्याओं का समाधान ढूँड़ना चाहिए। "आज [illegible] सामाजिक मूल्य-व्यवस्था को देखते हुए रंगमंच को छोडकर अच्छे कलाकारों के फिल्म-टि.वी. की ओर लगातार भागते जाने की [illegible] को बुरा-भला और कलाकारों को विश्वासघातकी कहना बेमानी ही नहीं बेईमानी भी है।"[6] बाजारवाद की अतिशयता का हम भला [illegible] विरोध करें लेकिन कलाकारों के पेट- परिवार के प्रश्नों का भी विचार किया जाता चाहिए। क्योंकि जिसप्रकार खाली पेट भक्ति नही की जा सकती उसी प्रकार पेट भरने पर तो संस्कृति एवं सभ्यता की आवश्यकता होती है। अतः आवश्यकता है समन्वय की।

संदर्भ सूचि :-

१. हिंदी नाटक का आत्मसंघर्ष- श्रीमती गिरीश रस्तोगी भूमिका।
२. [illegible]- स्वदेश दिपक पृ. ४
३. [illegible]
४. [illegible]
५. [illegible]
६. [illegible] पृ. [illegible]